M12/2/ABHIN/HP1/HIN/TZ0/XX/T

22122304

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 14 May 2012 (afternoon)
Lundi 14 mai 2012 (après-midi)
Lunes 14 de mayo de 2012 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

2212-2304

© International Baccalaureate Organization 2012

पाठांश क

ऐसे थे मेरे बाबू जीः अमिताभ बच्चन

मूर्धन्य कवि और साहित्यकार डॉक्टर हरिवंशराय बच्चन की जन्म शताब्दी पर फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन से बातचीत के कुछ अंश...

जब आप अपने पिताजी को याद करते हैं तो उनके व्यक्तित्व की ऐसी कौन सी विशेषता है जो सबसे पहले आपके ज़हन में आती है.

बहुत ही साधारण व्यक्ति, लेकिन सोच बहुत ऊँची...और मानसिक शक्ति उनमें बहुत थी। अनुशासन था उनके जीवन में। छोटी से छोटी चीज़ हो या बड़ी से बड़ी... हमेशा उन्होनें हमें यही सिखाया कि यदि मन का हो तो अच्छा, ना हो तो ज़्यादा अच्छा।

किस तरह के परिवेश में आप पले- बढ़े?

हमारा बहुत साधारण घर था। इलाहाबाद के निवासी थे हम लोग। और बाबूजी अधिकतर अपने कमरे में, अपने ऑफ़िस में या ‘राइटिंग टेबल’ पर ही बैठे रहते थे। दिन-रात पढ़ना या लिखना उनका कार्य रहता था। यदा-कदा लोग मिलने आते थे। साहित्यकार मिलने आते थे, कविगण आते थे। गोष्ठियाँ होती थी। मुलाक़ातें होती थी। इस तरह से साधारण लेकिन साहित्यपूर्ण वातावरण बना रहता था घर के अंदर। जब कभी बाबूजी कोई नई चीज़ लिखते, तो सबसे पहले वो माताजी को सुनाया करते थे। हम भी उसमें फिर शामिल होते थे। फिर उसको हमें समझाते थे, कि किस पर उन्होनें लिखा, विषय क्या है? उसका महत्व क्या है? तो इस तरह का माहौल था हमारे घर में।

आपको कब यह अहसास हुआ कि आप एक असाधारण पिता के पुत्र हैं?

जिस दिन से पैदा हुआ, उस दिन से ही मैं ‘पब्लिक फ़िगर’ बन गया। क्योंकि बाबूजी का इतना नाम था। जहाँ भी मैं जाता था बच्चनजी के पुत्र से संबोधित किया जाता था।

क्या बाबूजी ने कभी ये इच्छा ज़ाहिर की कि बेटों में से किसी का साहित्य की तरफ़ रूझान हो, साहित्यकार बनें?

नहीं, कभी उन्होने हम पर किसी तरह का दबाव नहीं डाला। ना ही किसी तरह से हमें ये कहा कि तुम्हें यही करना चाहिए, या कुछ और नहीं करना चाहिए। उन्होंने हमें हमेशा छूट दी कि जो तुम्हारा मन करे वो करो लेकिन जो भी करना हो उसे अच्छी तरह करना।

ये एक बहुत अच्छी बात रही कि उन्होने आपको एक विख्यात फिल्मी सितारे के रूप में देख लिया अपने जीवनकाल में ही, और ज़ाहिर है गर्व महसूस करते थे आप पर। आपकी फ़िल्मों पर बात करते थे?

वो मेरी सभी फ़िल्में देखते थे। और जब उनकी तबीयत ख़राब हो गई जब वो बाहर जाकर नहीं देख पाते थे, तो वीडियो पर देखा करते थे। पुरानी फिल्मों के बारे में उनकी रूचि ज़्यादा थी।

www.bbc.hindi.com (सोमवार 19 नवम्बर, 2007)

पाठांश ख

अंग प्रतिरोपण; तब का सपना, अब का सच

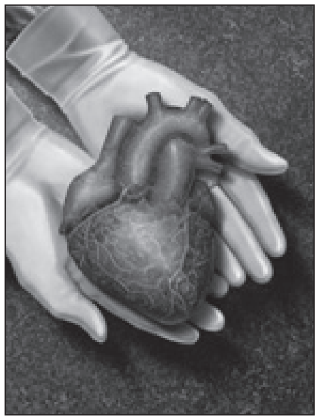

जब से आदमी ने धरती पर होश संभाला है, वह ज़िन्दगी की डोर को लम्बा करने के लिए तरह तरह के जतन करता आया है। आयुर्वेद, आयुर्विज्ञान और सभी चिकित्सा पद्धतियों की दीपशिखा इसी पुण्य विचार से प्रज्वलित है। धरती पर सबसे कुशाग्र मस्तिष्क वाले प्राणी आदमी ने इस मंजिल को पाने में निरंतर नई बुलंदियां चूमी हैं। नई प्रभावी दवाओं, रोग निरोधक टीकों और सर्जरी के विकास से पिछली सदी में आदमी की औसत उम्र ढाई से तीन गुनी बढ़ी है। जब शरीर से किसी प्रमुख अंग में जीवन-अग्नि बुझने लगती है, तब ज़िन्दगी से रुख़सत कहने का वक्त आ जाता है। इस मुश्किल घड़ी में भी मौत को हराने की फ़िराक में अंग-प्रतिरोपण सर्जन दर्द दे रहे थके-मांदे अंग की जगह नया दुरुस्त अंग ट्रांसप्लांट करने में पारंगत हो चुके हैं।

त्वचा, नेत्र, गुर्दे, जिगर, अग्न्याशय, दिल, फेफड़ों, मज्जा, और हड्डियों का प्रतिरोपण करने में शल्यचिकित्सक कई नए सूरज उगाने में कामयाबी पा चुके हैं। संतोष की बात यह है कि विकासशील देश कहलाए जाने के बावजूद भारत के बड़े शहरों में अंग-प्रतिरोपण सर्जरी का स्तर उन्नत देशों के मुकाबले का है। उस पर आने वाला खर्च यहाँ अपेक्षाकृत दसवें हिस्से से भी कम है। फिर भी दुनिया के 1/6 आबादी वाले इस देश में यह जीवनदायी सर्जरी कम ही लोगों को जीवन दे पाती है। सबसे बड़ी समस्या नए दुरुस्त अंग जुटाने की है। प्रतिरोपण के लिए अंग दो ही सूत्रों से मिल सकते हैं। या तो दुनिया से रुख़सत हो रहे किसी ऐसे शख़्स के ज़िस्म से, जिसके घरवाले उस ग़म की घड़ी में भी परोपकार की पवित्र भावना के तहत उसके अंगों को दान देने का मन बना सकें या उन जिंदादिल इनसानों से जो अपने सगे-संबंधी का जीवन बचाने के लक्ष्य से अपना अंग या उसका हिस्सा दान में देने के लिए राज़ी हो जाते हैं।

सुश्रुत* ने ईसा से 600 साल पहले त्वचा प्रतिरोपण की दिशा में सफल प्रयोग किए। उन्होंने युद्ध में घायल हुए योद्धाओं के चेहरे को त्वचा-आरोपण से सामान्य बनाने में सफलता हासिल की। 20 वीं सदी अंग-प्रतिरोपण सर्जरी के लिए स्वर्णिम साबित हुई। सन् 1954 में बोस्टन, अमरीका के पीटर बैंट बिगहैम अस्पताल में समरूप जुड़वा भाईयों के बीच गुर्दे का पहला क़ामयाब प्रतिरोपण हुआ। मंजिलें अभी और भी हैं, जेनेटिक इंजीनियरिंग से अंगों की आवश्यकतानुसार खेती हो सके, शोधकर्ता इस प्रयास में लगे हैं। इस कार्य में शोधकर्ताओं को सफलता भी मिली है। यह जतन कब साकार होंगे, भविष्य ही इसका साक्षी होगा!

कादम्बिनी, (अप्रैल 2010)

* सुश्रुत: प्राचीन भारत के प्रसिद्ध शल्यचिकित्सक। इनको शल्य क्रिया का पितामह माना जाता है।

पाठांश ग:

मकड़ी

[– X –]

अधिक बरस नहीं बीते जब बाज़ार ने खुद चल कर उसके द्वार पर दस्तक दी थी।चकाचौंध से भरपूर लुभावने बाज़ार को देखकर ग्राहक दंग रह गया था। उसने बाज़ार को समझाने की कोशिश की थी कि यह कोई रूपये-पैसे वाले अमीर व्यक्ति का घर नहीं, बल्कि एक ग़रीब बाबू का घर है, जहाँ हर महीने बंधी-बंधाई तनख्वाह आती है और बमुश्किल पूरा महीना खींच पाती है। इस पर बाज़ार ने हंसकर कहा था, “आप अपने आप को इतना हीन क्यों समझते हैं? इस बाज़ार पर जितना रूपये पैसों वाले अमीर लोगों का हक है, उतना ही आपका भी?”

[– 1 –]

बाज़ार ने जिस मोहित कर देने वाली मुस्कान में बात की थी, उसका असर इतना तेज़ी से हुआ था कि ग्राहक बाज़ार की गिरफ्त में आने से स्वयं को बचा न सका था। अब उसकी जेब में सुनहरी कार्ड रहने लगा था। धीरे धीरे उसमें आत्मविश्वास पैदा हुआ। जिन वातानुकूलित चमचमाती दुकानों में घुसने का साहस न होता था, वह उनमें गर्दन ऊंची करके जाने लगा। धीरे-धीरे घर का नक्शा बदलने लगा और सोफा, फ्रिज, रंगीन टी.वी, वाशिंग-मशीन आदि उसकी शोभा बढ़ाने लगे। आस-पड़ोस और रिश्तेदारों में उसका रुतबा बढ़ गया। घर में फोन की घंटियां बजने लगीं। हाथ में मोबाइल आ गया। कुछ ही समय बाद बाज़ार फिर उसके द्वार पर था। इस बार तो वह पहले से ज़्यादा लुभावने रूप में था। मुफ्त कार्ड, अधिक लिमिट, साथ में बीमा दो लाख का। जब चाहे वक्त बेवक्त ज़रूरत पड़ने पर ऐ.टी.ऍम. से कैश। वाकई ये तो एक जादुई चिराग था।

[– 2 –]

इसी बीच पत्नी भयंकर रूप से बीमार पड़ गई थी। डॉक्टर ने ऑपरेशन की सलाह दी थी और दस हज़ार का खर्चा बता दिया था। इतने रूपये कहाँ थे उसके पास? बंधे-बंधाये वेतन में से बमुश्किल गुज़ारा होता था। और अब तो बिलों का भुगतान भी हर माह भरना पड़ता था। पर उसका इलाज तो करवाना था। ए.टी.ऍम. से रूपया निकलवा कर उसने पत्नी का ऑपरेशन करवाया था।

[– 3 –]

लेकिन, कुछ बरस पहले लुभावना लगने वाला बाज़ार अब उसे भयभीत करने लगा था। हर माह आने वाले बिलों का न्यूनतम चुकाने में ही उसकी आधी तनख़्वाह ख़त्म हो जाती थी। इधर बच्चे बड़े हो रहे थे, उनकी पढ़ाई का खर्च बढ़ रहा था। कोई चारा न देख, आफिस के बाद वह दो घंटे पार्ट टाईम करने लगा। पर इससे अधिक राहत न मिली। बिलों का न्यूनतम ही वह अदा कर पाता था। बकाया रकम और उस पर लगने वाले ब्याज ने उसका मानसिक चैन छीन लिया था। उसकी नींद गायब कर दी थी। रात में, बमुश्किल आँख लगती तो सपने में जाले ही जाले दिखाई देते जिनमें वह खुद को बुरी तरह फंसा हुआ पाता।

[– 4 –]

छुट्टी का दिन था और वह घर पर था। डोर-बैल बजी तो उसने उठकर दरवाज़ा खोला। एक सुन्दर सी बाला फिर एक नया बाज़ार लिए उसके सामने खड़ी थी, मोहक मुस्कान बिखेरती। उसने फटाक से दरवाज़ा बंद कर दिया। उसकी साँसे तेज़ हो गयी थीं, जैसे कोई भयानक चीज़ देख ली हो। पत्नी ने पूछा, “क्या बात है? इतना घबरा क्यों गए? बाहर कौन है?

“मकड़ी!”

http://www.abhivyakti-hindi.org (1 अगस्त 2006)

पाठांश घ:

वर्षा के पानी का संरक्षण

पानी की समस्या आज भारत के कई हिस्सों में विकराल रूप धारण कर चुकी है। इस समस्या से जूझने के कई प्रस्ताव भी सामने आएँ हैं और उनमें से एक है नदियों को जोड़ना। लेकिन यह काम बहुत महँगा और बृहद स्तर का है, साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से काफ़ी ख़तरनाक साबित हो सकता है, जिसके विरुद्ध काफी प्रतिक्रियाएँ भी हुई हैं। कहावत है बूँद-बूँद से सागर भरता है, यदि इस कहावत को अक्षरशः सत्य माना जाए तो छोटे-छोटे प्रयास एक दिन काफी बड़े समाधान में परिवर्तित हो सकते हैं। इसी तरह से पानी को बचाने के कुछ प्रयासों में एक उत्तम व नायाब तरीका है आकाश से बारिश के रूप में गिरे हुए पानी को बर्बाद होने से बचाना और उसका संरक्षण करना। शायद ज़मीनी नदियों को जोड़ने की अपेक्षा आकाश में बह रही गंगा को जोड़ना ज़्यादा आसान है।

तमिलनाडु भारत में जल संरक्षण की मिसाल बन कर उभर रहा है। पिछले कुछ सालों से गंभीर सूखे से जूझने के बाद तमिलनाडु सरकार इस मामले में और भी प्रयत्नशील हो गई है और उसने एक आदेश जारी किया जिसके तहत सारे शहरी मकानों और भवनों की छतों पर वर्षा जल संरक्षण संयत्रों (वजस) का लगाना अनिवार्य हो गया है। अगले एक साल के अंदर तमिलनाडु के लगभग हर भवन में, ख़ासतौर से चेन्नई में 'वजस' लग चुके थे। उस साल बारिश भी कम हुई लेकिन परिणाम चौंकाने वाले थे और सुखद थे। चेन्नई के कुओं में पानी का स्तर काफी बढ़ चुका था और पानी का खारापन कम हो गया था। सड़कों पर पानी का बहाव कम था और पहले जो पैसा पानी के टैंकरों पर खर्च होता था, लोगों की जेबों में सुरक्षित था। जल आभाव की पूर्ति के लिए पानी के कुएँ खोदे जा रहें हैं। क्लब, विद्यालय, छात्रावास, होटल सब जगह पर कुओं की खुदाई होने लगी है। वर्षा जल को बचाने के कई पुराने व सस्ते किंतु निष्क्रिय तरीके हैं। पहले भारत के गाँवों में तालाब हुआ करते थे। तालाबों को अनदेखा किया गया और उनके ऊपर मिट्टी और रेत जमा होती गई। पानी के लिए स्वसहायता चेन्नई में एक सामाजिक प्रक्रिया बन गई हैं। राजाओं द्वारा बनवाए गए भव्य मंदिरों की टंकिया अब पानी से भरी जाती है। आजकल चेन्नई में पानी का पुनरूपयोग एक चलन बन गया है। कचरा युक्त गंदे पानी का भी उपयोग होने लगा है। स्थानीय नागरिक पानी को साफ़ करके शौचालयों और बगीचों में दोबारा इस्तेमाल में ला रहे हैं। उनका मानना है कि नालों में बहने वाले पानी का 80 प्रतिशत हिस्सा साफ़ करके पुन: उपयोग में लाया जा सकता है। चेन्नई पेट्रोलियम, जो एक बड़ा तेल शोधक कारखाना है और पानी का काफी प्रयोग करता है, ने पानी के पुनर्चक्रण में भारी सफलता हासिल की है। ये इस पानी की गंदगी के टंकियों में नीचे बैठने के बाद उल्टे परासरण का प्रयोग करके ठोस पदार्थों को बाहर निकाल देते हैं। बाकी बचा पानी 98.8 प्रतिशत साफ होता है और कई कामों में प्रयोग में लाया जा सकता है जैसे कि शौचालयों की सफ़ाई, बगीचों में प्रयोग। सफ़ाई से निकली कीचड़ को वनस्पति कचरे में मिलाकर खाद बनाई जाती है जो उनके वृहद प्रांगण को हरा-भरा रखने में काम आती है। पानी की समस्याओं का निवारण करने के लिए केवल कुछ अनुकरणीय उदाहरणों की और कुछ सामान व जानकारी की ज़रूरत है। ये कुछ ऐसे उदाहरण है जिनसे कि आम आदमी को थोड़ा पैसा और थोड़ा प्रयास लगा कर इस काम को करने की प्रेरणा मिलती है। इन कामों के लिए किसी भी सहायता या निगरानी की ज़रूरत नहीं है और न ही नदियों को जोड़ने जैसी बृहद परियोजनाओं की।

http://www.abhivyakti-hindi.org/prakriti/2005/varsha.htm (24 जून 2005)